SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI
Monthly Newsletter
फरवरी
2026

"सीख, सहयोग और संरचना
एक मजबूत नींव का महीना"

"छोटू" की जादुई दुनिया और आविष्कार की नई दृष्टि

(आविष्कार प्रशिक्षण कार्यशाला - नये बैच का एक अनुभव)

गाँव की पगडंडियों पर चलते हुए अक्सर हम मिट्टी, पत्थर और पानी को सिर्फ निर्जीव वस्तुएं मानते हैं, लेकिन 5 दिनों की 'आविष्कार' वर्कशॉप ने 21 फेलोज की आँखों पर एक ऐसा जादुई चश्मा चढ़ा दिया, जिससे उन्हें हर चीज़ में जीवन और हलचल दिखने लगी। यह कहानी है उस बदलाव की, जो प्रशिक्षण के माध्यम से अब ग्रामीण कक्षाओं तक पहुँचने वाला है।

जिज्ञासा का जन्म: "छोटू" कौन है?

ट्रेनिंग के पहले दिन जब ट्रेनर्स ने पूछा, "क्या आपने कभी सोचा है कि एक विशाल बरगद का पेड़ या लोहे की कुदाल आखिर बनी किस चीज़ से है?" तो फेलोज के मन में किताबी परिभाषाएं घूमने लगीं। लेकिन जब इसे "छोटू" (सूक्ष्म कणों) का नाम दिया गया, तो विज्ञान एक भारी विषय से बदलकर एक रोचक खेल बन गया। फेलोज ने सीखा कि दुनिया की हर चीज़ छोटे-छोटे "छोटूओं" का समूह है। जब ये पास आते हैं तो ठोस बन जाते हैं, और जब दूर भागते हैं तो गैस। यह सरल भाषा ही उनकी सबसे बड़ी जीत थी।

फेलो की नई समझ : रटने से सोचने तक

एस.एम.टी (SMT) बैच के फेलोज, जो खुद विषयों के विशेषज्ञ प्रशिक्षण ले रहें हैं, उन्होंने महसूस किया कि असली चुनौती 'क्या पढ़ाना है' में नहीं, बल्कि 'कैसे पढ़ाना है' में है। उन्होंने सीखा कि विज्ञान 'रटने' का नहीं बल्कि 'क्यों' और 'कैसे' पूछने का विषय है। ट्रेनिंग ने उनकी तर्क शक्ति को बढ़ाया और उन्हें सिखाया कि कठिन वैज्ञानिक सिद्धांतों को माचिस की तीलियों या कंकड़ों के जरिए भी बच्चों के दिल में उतारा जा सकता है।

ग्रामीण भारत में इंप्लीमेंटेशन : अब हर घर में होगा वैज्ञानिक

अब इस ट्रेनिंग का असली जादू ग्रामीण स्कूलों में दिखेगा। फेलोज अब सीधे ब्लैकबोर्ड पर परिभाषा नहीं लिखेंगे, बल्कि:

- **स्थानीय संसाधनों का जादू :** वे गाँव में उपलब्ध मिट्टी, पत्तों और घरेलू सामान को "छोटू" की कहानी समझाने का जरिया बनाएंगे।
- **बदलाव की कहानी :** जब बच्चे समझेंगे कि दूध से दही बनना या लोहे में जंग लगना दरअसल "छोटूओं" की आंतरिक उथल-पुथल है, तो उनकी वैज्ञानिक सोच विकसित होगी।
- **जिज्ञासा का सम्मान :** कक्षा में अब बच्चों को सवाल पूछने से रोका नहीं जाएगा, बल्कि उन्हें "क्यों" कहने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

इस आविष्कार कार्यशाला से निकले फेलोज अब केवल शिक्षक नहीं, बल्कि 'विज्ञान के दूत' हैं। वे ग्रामीण बच्चों को यह सिखाएंगे कि विज्ञान किताबों में बंद कोई रहस्य नहीं है, बल्कि वह तो उनके आसपास की मिट्टी के हर "छोटू" में बसा हुआ है। यह 5 दिन का सफर, ग्रामीण भारत की शिक्षा व्यवस्था में एक सूक्ष्म लेकिन सशक्त परिवर्तन की नींव रख चुका है।

नुक्कड़ नाटक की गूँज

बेमेतरा के इस गाँव में नशे पर 'जुर्माना' और स्वच्छता पर 'इनाम'

बेमेतरा

जब इरादे नेक हों और अभिव्यक्ति का माध्यम सशक्त, तो बदलाव आने में देर नहीं लगती। संकल्प – एक प्रयास संस्था के 'गरिमा प्रोजेक्ट' की फेलो सुमन सेन के नेतृत्व में स्कूली बच्चों ने कला के जरिए वह कर दिखाया, जो बड़े-बड़े भाषण नहीं कर पाए। 26 जनवरी के पावन अवसर पर आयोजित एक नुक्कड़ नाटक ने न केवल लोगों का मनोरंजन किया, बल्कि गाँव की व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव ला दिए।

कला से बदलाव की दस्तक

विकासखंड बेमेतरा के एक स्थानीय विद्यालय में बच्चों ने जब 'नशा मुक्ति और स्वच्छता' को केंद्र में रखकर अपनी प्रस्तुति दी, तो माहौल भावुक और विचारोत्तेजक हो गया। मादक पदार्थों के दुष्प्रभाव और गंदगी से फैलती बीमारियों को बच्चों ने इतनी सरलता से समझाया कि वहाँ मौजूद पाँच गाँवों के जनप्रतिनिधि और ग्रामीण दंग रह गए।

सरपंच का ऐतिहासिक फैसला : नशा किया तो 5000 का दंड

नाटक के प्रभाव का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि कार्यक्रम के तुरंत बाद ग्राम सरपंच ने कड़े अनुशासन की घोषणा कर दी। गाँव को नशामुक्त बनाने के लिए अब नए नियम लागू किए गए हैं:

आर्थिक दंड : सार्वजनिक रूप से नशा करते पाए जाने पर 5000 का जुर्माना।

मुखबिर को प्रोत्साहन : नशे की अवैध गतिविधियों की सूचना देने वाले सजग नागरिक को 3000 का पुरस्कार।

कड़ी कार्रवाई : चेतावनी के बाद भी शराब बेचने वालों को 'मनरेगा' के कार्यों से वंचित किया जाएगा।

"बच्चों की प्रस्तुति ने हमें यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को कैसा भविष्य दे रहे हैं। अब गाँव में नशा और गंदगी बर्दाश्त नहीं की जाएगी।"

— स्थानीय सरपंच (सुनीता साहू)

स्वच्छता के लिए 'डोर-टू-डोर' निगरानी

सिर्फ नशा ही नहीं, स्वच्छता को लेकर भी प्रशासन अब सख्त है। आयोजन में तय किया गया कि:

- शादी-ब्याह या अन्य आयोजनों के बाद जूठे पत्तल और कचरे के निपटान के लिए अनिवार्य रूप से स्वच्छता गाड़ी का उपयोग होगा।
- सड़कों पर कचरा फेंकना अब प्रतिबंधित है।
- 'स्वच्छता दीदी' अब सीधे घरों से कचरा संग्रह करेंगी ताकि सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी न हो।

सामूहिक जिम्मेदारी की जीत

सुमन सेन और गरिमा प्रोजेक्ट के इस प्रयास ने यह साबित कर दिया कि जागरूकता सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं होनी चाहिए। आज इस गाँव के लोग न केवल नशे के प्रति सचेत हैं, बल्कि अपनी सामूहिक जिम्मेदारी को समझते हुए एक स्वस्थ समाज के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

नवोदय की राह: ग्रामीण सपनों को उड़ान देता 'सृजन'

फरवरी का यह महीना सृजन कार्यक्रम के अंतर्गत केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह नन्हे सपनों को हकीकत में बदलने की एक बड़ी 'सृजन-यात्रा' बन गया। ग्रामीण परिवेश के बच्चों के लिए जवाहर नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा केवल एक टेस्ट नहीं, बल्कि एक बेहतर भविष्य का द्वार है।

इस महीने की मुख्य उपलब्धियाँ

- **नवोदय लिखित परीक्षा का महाकुंभ :** 207 बच्चों ने नवोदय लिखित परीक्षा में हिस्सा लिया।
- **कौशल विकास:** इन परीक्षाओं के माध्यम से बच्चों ने न केवल परीक्षा के पैटर्न को समझा, बल्कि समय प्रबंधन (Time Management) और तर्कशक्ति (Reasoning) में भी महारत हासिल की।
- **व्यापक पहुँच:** इस मुहिम को 250 गाँवों तक पहुँचाया गया, जिससे अंतिम छोर पर खड़े बच्चे को भी समान अवसर मिल सके।

सामुदायिक शिक्षक : तैयारी का मजबूत स्तंभ

नवोदय की इस कठिन डगर को आसान बनाने में हमारे 500 सामुदायिक शिक्षकों की भूमिका सराहनीय रही है।

- **प्रशिक्षण और रणनीति :** इन शिक्षकों को SAT-MAT तकनीकों, बुनियादी शिक्षण कौशल और आधुनिक परीक्षा पैटर्न पर विशेष प्रशिक्षण दिया गया।
- **निरंतर सहयोग :** शिक्षक हर दिन गाँव-गाँव जाकर बच्चों का मार्गदर्शन कर रहे हैं।
- **अभ्यास का आधार :** प्रश्न बैंक, विशेष वर्कशीट और मॉडल टेस्ट पेपर ने बच्चों में स्वयं अभ्यास (Self-study) की एक ऐसी नींव रखी है, जो भविष्य की हर प्रतियोगी परीक्षा में उनके काम आएगी।

बदलाव के सकारात्मक संकेत

तैयारी के इस दौर ने बच्चों के व्यक्तित्व में कई बड़े सुधार किए हैं:

- **आत्मविश्वास :** परीक्षा का डर खत्म हुआ और खुद पर यकीन बढ़ा।
- **तार्किक क्षमता :** मानसिक योग्यता (MAT) के अभ्यास से बच्चों की सोचने की शक्ति तेज हुई।
- **सामुदायिक जुड़ाव :** शिक्षकों, फेलोज और अभिभावकों के बीच एक मजबूत समन्वय स्थापित हुआ।

"मुझे पहली बार लगा कि मैं भी नवोदय परीक्षा पास कर सकती हूँ।"

— पायल, ग्राम: गभरा

सृजन का यह प्रयास केवल एक प्रवेश परीक्षा की तैयारी नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण प्रतिभाओं को उनके सामर्थ्य से परिचित कराने का एक जरिया है। सभी फेलोज और सामुदायिक शिक्षकों की मेहनत ने आज सैकड़ों बच्चों को उनके सुनहरे भविष्य के एक कदम और करीब पहुँचा दिया है।

संकल्प से सिद्धि:

राधिका की 'जीरो बजट' स्वास्थ्य क्रांति

कहते हैं कि यदि मन में सेवा का भाव हो और इरादे फौलादी हों, तो बिना किसी बड़े बजट के भी समाज में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है। बेमेतरा जिले की गरिमा फेलो (प्रथम बैच) राधिका साहू ने इसे हकीकत में बदल कर दिखाया है। यह कहानी एक ऐसी कोशिश की है जिसने संवाद और समन्वय की शक्ति से सैकड़ों चेहरों पर मुस्कान बिखेरी।

एक मुलाकात और बड़े बदलाव की शुरुआत

राधिका की इस मुहिम की नींव 'आरोग्य मंदिर' में मनीषा पाल मैडम के साथ काम करने के दौरान पड़ी। वहीं चर्चा के दौरान उन्हें 'विरायु टीम' के बारे में पता चला। राधिका ने केवल जानकारी ही नहीं ली,बल्कि तुरंत कदम बढ़ाते हुए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, बिरला के बीएमओ (BMO) सर और विरायु टीम से मुलाकात की। राधिका के विजन को देखते हुए बीएमओ सर ने न केवल पूरा सहयोग दिया, बल्कि क्षेत्र में कार्य करने की अनुमति भी प्रदान की। यहीं से शुरू हुआ 'जीरो बजट' पर स्वास्थ्य सेवा का एक अनूठा सफर।

गांव-गांव पहुँचा स्वास्थ्य का उजाला

फ़रवरी माह की कड़ाके की ठंड में, राधिका ने विरायु टीम के साथ मिलकर बेमेतरा के 6 गांवों में स्वास्थ्य जांच शिविरों का जाल बिछाया।

- **आंगनबाड़ियों में दस्तक :** छोटे बच्चों की आँख, नाक, गला और वजन की बारीकी से जांच की गई।
- **स्कूलों में जागरूकता :** स्वास्थ्य परीक्षण के साथ-साथ किशोरियों को 'माहवारी स्वच्छता' (Menstrual Hygiene) और सही पोषण का पाठ पढ़ाया गया।
- **मातृत्व सुरक्षा :** गर्भवती और शिशुवती माताओं का विशेष चेकअप किया गया। बिरला अस्पताल में आयोजित एक विशेष कार्यशाला में माताओं को स्वच्छता के प्रति जागरूक करते हुए 100 सेनेटरी पैड वितरित किए गए।

सहयोग के हाथ, सफलता के साथ

यह मिशन इसलिए सफल रहा क्योंकि इसे डॉ. संजीव, डॉ. डॉली, डॉ. रजवंती राजवाड़े, डॉ. दुलारी वर्मा और डॉ. डुगेश्वर पाटिल जैसे विशेषज्ञों का साथ मिला। इन स्वास्थ्य कर्मियों के समर्पण ने राधिका के प्रयास को एक नई ऊंचाई दी।

आंकड़ों में एक बड़ी उपलब्धि

बिना किसी सरकारी या निजी फंड के, केवल आपसी तालमेल से जो परिणाम निकले वे चौंकाने वाले थे:

आंगनबाड़ी बच्चे	महिलाएँ	किशोरी बालिकाएँ
70–80	174+	25+
21+	28+	100

सीख: संवाद ही समाधान है

राधिका साहू की यह सफलता यह सिखाती है कि सामाजिक बदलाव के लिए हमेशा लाखों रुपयों की जरूरत नहीं होती। सही संवाद (Communication) और समन्वय (Coordination) से हम सरकारी तंत्र और समुदाय के बीच का सेतु बन सकते हैं। राधिका की यह छोटी सी शुरुआत आज बेमेतरा के कई गांवों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गई है।

"समन्वय और सहयोग से हम वहां भी बदलाव ला सकते हैं, जहां संसाधन सीमित हों। मेरी कोशिश बस एक जरिया थी, असली ताकत तो समुदाय की एकजुटता में है।"

—राधिका साहू

उड़ान नशामुक्त भविष्य की:

सोमनी की बेटियों की कहानी

सोमनी गाँव की सुबह आज रोज जैसी नहीं थी। स्कूल के मैदान में जहाँ बच्चों के ठहाके गूँजते थे, वहाँ आज एक गंभीर संकल्प की खामोशी थी। किशोर सभा की बालिकाओं ने अपनी आँखों में एक सपना और हाथों में बदलाव की मशाल थाम रखी थी।

स्कूल, जिसे 'विद्या का मंदिर' कहा जाता है, वहाँ की दीवारों और झाड़ियों के पीछे का दृश्य डरावना था। मैदान के कोनों में शराब की खाली बोतलें, गुटखे के पाउच और तंबाकू की पन्नियाँ बिखरी रहती थीं। नन्हीं खिलखिलाती उम्र के बच्चे अनजाने में इन पन्नियों को मुँह में डाल लेते थे, और टूटे हुए काँच के टुकड़े अक्सर खेलते हुए बच्चों के पैरों को लहुलुहान कर देते थे। लेकिन सबसे बड़ा डर शारीरिक चोट का नहीं, बल्कि मानसिक जहर का था। बड़े-बूढ़ों को नशा करते देख, स्कूल के किशोर बच्चे भी धीरे-धीरे उस अंधेरी राह की ओर आकर्षित हो रहे थे।

जब बेटियों ने संभाली कमान

"अगर हम आज नहीं जागेंगे, तो हमारा कल बर्बाद हो जाएगा," किशोर सभा की एक बालिका ने सभा के दौरान दृढ़ता से कहा। और बस, वहीं से शुरू हुआ एक ऐतिहासिक जागरूकता अभियान।

बालिकाओं ने स्कूल के मैदान को ही अपना मंच बनाया। उन्होंने किसी बड़े तामझाम के बिना एक मार्मिक नुक्कड़ नाटक पेश किया। नाटक में दिखाया गया कि कैसे एक हंसता-खेलता परिवार नशे की भेंट चढ़ जाता है और कैसे एक होनहार छात्र अपनी पढ़ाई और भविष्य को धुएँ में उड़ा देता है।

पोस्टर और संदेश: बदलाव की गूँज

हाथों में खुद के बनाए रंगीन पोस्टर लिए, उन बालिकाओं ने भीड़ के बीच जाकर लोगों को जागरूक किया। उनके पोस्टरों पर लिखे शब्द हर किसी के दिल को झकझोर रहे थे:

"नशा छोड़ो, भविष्य जोड़ो।"

"स्कूल का मैदान खेल के लिए है, नशे के लिए नहीं।"

एक अटूट संकल्प

बालिकाओं ने साफ़ संदेश दिया कि यह अभियान केवल एक दिन का प्रदर्शन नहीं है। उन्होंने कसम खाई कि जब तक स्कूल परिसर पूरी तरह नशामुक्त नहीं हो जाता, उनकी आवाज़ शांत नहीं होगी। गाँव के बुजुर्गों और युवाओं ने जब अपनी ही बेटियों को इस तरह समाज की रक्षा के लिए खड़ा देखा, तो उनकी आँखों में गर्व और अपनी गलतियों के लिए पश्चाताप दोनों था।सोमनी की इन बेटियों ने साबित कर दिया कि जागरूकता फैलाने के लिए उम्र नहीं, बल्कि बुलंद हौसलों की जरूरत होती है। उनके इस सराहनीय कार्य ने पूरे क्षेत्र में एक नई चेतना जगा दी है

संकल्प की नई उड़ान:
मार्गदर्शन से धरातल तक बदलाव

फरवरी का महीना 'संकल्प' संस्थान के लिए प्रगति का नया अध्याय लेकर आया। सीख, सृजन और गरिमा कार्यक्रम के सुझावों पर अमल का जायजा लेने हमारे मार्गदर्शक विनीत अय्यर सर पुनः संस्थान पहुंचे।

- **सार्थक संवाद :** विनीत सर जी , फेलो और कोऑर्डिनेटर्स के साथ गहन चर्चा की। इस बातचीत का उद्देश्य जमीनी चुनौतियों को समझना और टीम के बीच कार्ययोजना को लेकर नई स्पष्टता लाना था।
- **प्रशिक्षण का असर :** सर ने विशेष रूप से आंगनबाड़ी केंद्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने देखा कि मुक्तांगन से प्रशिक्षण लेकर आई 'गरिमा' टीम कैसे नए तरीकों को जमीन पर लागू (Implement) कर रही है।
- **दिखने लगा सुधार :** निरीक्षण के दौरान बच्चों की एंड-लाइन प्रोग्रेस, बढ़ती अटेंडेंस और लाइब्रेरी के प्रति बढ़ते रुझान की सराहना की गई। सुबह की क्लासेस में अनुशासन और ऊर्जा का नया माहौल दिखाई दिया।

विनीत सर की पैनी नजर और मार्गदर्शन ने हमारी छोटी-छोटी कमियों को सुधारने का रोडमैप दिया है। अब 'संकल्प' की टीम और भी अधिक आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर है। "सही मार्गदर्शन और निरंतर प्रयास ही किसी भी संस्थान की असली ताकत होते

SEP की गतिविधियाँ और कवरेज”

फेलोशिप प्रोग्राम

ABG Fellows
31

Seekh Fellows
06

Srijan Fellows
09

Garima Fellows
10

Trainee Seekh Fellows
29

Trainee Srijan Fellows
22

Trainee Garima Fellows
26

सीख : प्रोग्राम

सामुदायिक शिक्षक
494

लर्निंग रिसोर्स सेंटर
250 (11700 छात्र)

ई-मर्ज (डिजिटल कक्षाएं)
170

विलेज लेवल शिक्षा समिति
(ABG सपोर्ट समूह)
236

सीख पीयर लीडर
1297

सहभागी पालक
4474

सृजन: प्रोग्राम

सामुदायिक शिक्षक
433

लर्निंग रिसोर्स सेंटर
246 (8191 छात्र)

ई-उड़ान (डिजिटल कक्षाएं)
56

विलेज लेवल शिक्षा समिति
30

सृजन पीयर लीडर
381

NMMSE प्रयासरत छात्र
1100

सहभागी पालक
480

स्टेम वर्कशॉप
112 (843 छात्र)

कंप्यूटर लैब
15 (951 छात्र)

होम विजिट
605

गरिमा : प्रोग्राम

गरिमा मंच
205 (3939 प्रतिभागी)

स्कूल कार्यशाला
268 (13749 प्रतिभागी)

किशोर सभा
315 (3780 छात्र सदस्य)

ABG सपोर्ट समूह
60

होम विजिट
149

जागरूकता कार्यक्रम
(नुक्कड़-नाटक)
90 सत्र

गरिमा पीयर एजुकेटर
46

स्वास्थ्य मेला
12
प्रतिभागी :- 1116 (WOMEN, MEN , ADOLESCENT G,B

SIR सहयोग
86 परिवार

पैड वितरण
320

मेरे प्रिय पाठकों और संकल्प परिवार,

फरवरी 2026 का यह महीना 'संकल्प एक प्रयास' की यात्रा में बदलाव की एक जीवंत गाथा बनकर उभरा है। "आविष्कार" कार्यक्रम के माध्यम से विज्ञान अब किताबों से बाहर निकलकर "छोटू" (अणु-परमाणु) जैसी सरल अवधारणाओं के जरिए बच्चों की वैज्ञानिक सोच का हिस्सा बन चुका है। बेमेतरा के गाँवों में हमारी 'गरिमा' फेलोज और बेटियों ने नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से नशे पर 'जुर्माना' और स्वच्छता पर 'इनाम' की एक नई सामाजिक संस्कृति की नींव रखी है, जो बड़े-बड़े भाषणों से कहीं अधिक प्रभावशाली सिद्ध हो रही है।

शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी हमारे कदम मजबूती से बढ़े हैं। 'सृजन' कार्यक्रम के तहत 250 गाँवों के 207 बच्चे नवोदय परीक्षा के जरिए अपने सुनहरे भविष्य की राह बुन रहे हैं, वहीं राधिका जैसी फेलोज ने सीमित संसाधनों में भी संवाद और समन्वय के जरिए स्वास्थ्य क्रांति का नेतृत्व किया है। विनीत अय्यर सर के मार्गदर्शन में आंगनबाड़ियों का 'मुक्तांगन' प्रशिक्षण में बदलना और सोमनी की बेटियों द्वारा स्कूल को नशामुक्त कराने का संकल्प यह दर्शाता है कि हमारी ग्रामीण बेटियाँ अब समाज की वास्तविक 'परिवर्तनकारी नेतृत्वकर्ता' बन चुकी हैं। चुनौतियाँ बड़ी हैं, लेकिन हमारे फेलोज के बुलंद हौसले यह विश्वास दिलाते हैं कि हम शिक्षा और स्वावलंबन की इस मशाल को हर अंधेरे कोने तक पहुँचाएंगे। आइए, बदलाव के इस 'आविष्कार' को मिलकर जारी रखें।

शुभकामनाओं सहित,

परिमल सिन्हा,
संस्थापक- संकल्प एक प्रयास

हमारे सहयोगी संस्थाएं

Caring Friends – Helping Good NGOs Perform Better – MUMBAI
SARDA – SARDA ENERGY & MINERALS LTD.
DONATEKART
Arpan Foundation
Asha for Education – Bringing hope through education
muktangan – learning & growing together
आविष्कार – गणित-विज्ञान की एक प्रयोगशाला – Aavishkaar – Center for Science, Math, Arts and Technology
phf Paul Hamlyn Foundation
INVOLVE – Building Tomorrow
VIKAS SAMVAD
अध्ययन ADHYAYAN

SANKALP – Empowering Dreams, Building Future

SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI

Sankalp ek prayas, Virat Nagar, Utai, Durg (C.G.)
Email : sankalpekprayas@gmail | Web : www.sankalpekprayas.org

Follow us on : @SankalpEkPrayas-s4i @SANKALPEK_PRAYAS